सोम सदन गीत

सोम सदन यह सोम सदन।
कितना प्यारा मन भावन।
राग–द्वेश हमसे भागे।
नव आशा लेकर जागे।
विश्व घिरा है शोलों में।।
हम आएं सबसे आगे।
प्यार प्रीत का ले सावन।।
सोम सदन यह सोम सदन
कितना प्यारा मन भावन।।

हमने हँसना सीखा है,
पतझड़ और बहारों में
हम चमकें जग में ऐसे,
जैसे चाँद सितारों में।
जीवन अपना है मधुबन,
सोम सदन यह सोम सदन।
कितना प्यारा मन भावन

पीले वस्त्र सजे तन पर,
मन में स्वर्णिम अभिलाषा।
जीवन के दुखों से डर
हम नर व्याघ्र न हारेंगे,
पथ में पर्वत हो या वन।
सोम सदन यह सोम सदन,
कितना प्यारा मन भावन।।

सत्यकाम यादव
(भूतपूर्व शैक्षणिक प्रभारी)